Ayush Rudhra

PREMIUM KUNDALI

Sample Report Preview

Vedic Birth Chart • Dashas • Life Areas

Charts • Annual Timing • Traditional Calculations

PUBLIC SAMPLE

Illustrative report pages only

No real customer identity or birth details are shown

AYUSHRUDHRA

Vedic Astrology • Personalized Guidance

www.ayushrudhra.com • WhatsApp / Call +91 8960093488

आपका लग्न

लग्न क्या बताता है ?

जन्म के क्षण पूर्वी क्षितिज पर उदित राशि को लग्न कहा जाता है। यह व्यक्तित्व की बाहरी अभिव्यक्ति, जीवन के प्रति मूल दृष्टिकोण, पहल करने की शैली और अनेक भावों की आधार-रचना को समझने का प्रमुख संदर्भ है। किसी भी फलादेश में लग्न को उसके स्वामी, ग्रह-स्थिति, भावबल, दृष्टि, वर्ग-कुंडली और दशा के साथ पढ़ना अधिक उचित है।

लग्न	कन्या	**लग्नेश**	बुध
चंद्र राशि	वृश्चिक	**जन्म नक्षत्र**	अनुराधा

आपका लग्न : कन्या

कन्या राशि के व्यक्ति व्यावहारिक, विश्लेषणात्मक, भेदभाव करने वाले ,तुनुकमिज़ाज शांत, शर्मीले , गंभीर, विचारशील,सख्त,सतर्क,विनयशील,जानकारी के लिए चौकस, और कुछ हद तक आत्म केन्द्रित होते हैं। आप एक, सरल सक्रिय और सतर्क दिमाग के मालिक हैं । ज्ञान पाना और उसका अच्छे कार्यों में उपयोग करना आप के लिए महत्वपूर्ण हैं। आप जीवन में पूर्णता पाने के लिए सतत प्रयास करते हैं और जीवन में आपने अपने आदर्श और मापदंड इतनी ऊंचे स्थापित किये हुए हैं कि,हर कोई आपके साथ या आसपास रहना चाहता है। लेकिन कई बार दूसरे उन उच्च आदर्शों के लिए पर्याप्त 'अच्छे ' नहीं हो सकते । आपके भीतर यह विशेष योग्यता है कि कहाँ क्या गलत है यह आप पता लगा लेते हैं । कभी कभी, हालांकि, आप जिन्हे प्यार करते हैं ,उनके ऊपर और उनकी गतिविधियों पर आपकी आलोचनात्मक दृष्टि अक्सर संबंधों में खटास पैदा कर सकती हैं। आपको निराशावाद औरस्वयं की अत्यधिक आलोचना, अपने इन दो दोषों में सुधार करने की कोशिश करनी चाहिए।आप की प्रवृत्ति विशेष रूप से छोटे क्रिया-कलापों और छोटे छोटे विवरण के बारे में बहुत ज्यादा चिंता करने की हो सकती है। बहुत ज्यादा चिंता स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकती है। आप को हर अनुभव को पचाने और कड़वाहट, अफसोस, द्वेष या असंतोष के बिना इसे आत्मसात करना, सीखने की जरूरत है। अयोग्यता की भावना द्वारा उपजी अपने अन्दर की नकारात्मकता से आपको

SAMPLE

स्वभाव एवं व्यक्तित्व

इस लग्न की मूल अभिव्यक्ति विश्लेषणात्मक, सेवा-केंद्रित और सुधारोन्मुख मानी जाती है। आपकी प्रमुख स्वाभाविक क्षमता सूक्ष्मता, व्यवस्था और व्यावहारिक समस्या-समाधान से जुड़ती है। बाहरी व्यवहार में स्थिरता तब बढ़ती है जब निर्णय केवल तत्काल प्रतिक्रिया से नहीं, बल्कि दीर्घकालिक उद्देश्य और उपलब्ध तथ्यों के साथ लिए जाएँ।

कार्यशैली एवं निर्णय

लग्न व्यक्ति की कार्य-गति और आरंभिक प्रतिक्रिया का आधार देता है। कन्या लग्न के लिए सूक्ष्मता, व्यवस्था और व्यावहारिक समस्या-समाधान को कार्य-शैली की शक्ति बनाया जा सकता है। योजना बनाते समय पूर्णतावाद या स्वयं की जरूरत से ज्यादा आलोचना से जुड़े पैटर्न की समीक्षा करने पर निर्णय अधिक संतुलित रह सकते हैं।

संबंध एवं सामाजिक अभिव्यक्ति

संबंधों में लग्न यह बताता है कि व्यक्ति स्वयं को दुनिया के सामने कैसे प्रस्तुत करता है। वास्तविक संबंध-फल के लिए सप्तम भाव, शुक्र, गुरु, चंद्र, नवांश और सक्रिय दशा को भी साथ पढ़ा गया है; इसलिए आगे के विवाह और संबंध अध्याय इस लग्न-चित्र को अधिक विस्तृत संदर्भ देते हैं।

जीवन-ऊर्जा एवं संतुलन

यह भाग चिकित्सीय निदान नहीं है। ज्योतिषीय दृष्टि से लग्न और प्रथम भाव जीवन-ऊर्जा, दिनचर्या और शरीर के प्रति जागरूकता के संकेत देते हैं। पूर्णतावाद या स्वयं की जरूरत से ज्यादा आलोचना से जुड़े अतिरेक को संतुलित करना, नियमित दिनचर्या और पर्याप्त विश्राम बनाए रखना व्यावहारिक रूप से सहायक हो सकता है।

नक्षत्र फल

नक्षत्र क्या बताता है ?

वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा की जन्मकालीन नक्षत्र स्थिति मन की प्रतिक्रिया, आदतों, स्मृति, भावनात्मक ग्रहणशीलता और समय-चक्र के सूक्ष्म संकेतों का महत्वपूर्ण आधार है। नक्षत्र को उसके चरण, चंद्र राशि, चंद्र भाव, नक्षत्र स्वामी और सक्रिय दशा के साथ पढ़ने पर अधिक व्यक्तिगत अर्थ मिलता है।

जन्म नक्षत्र	अनुराधा	**चरण**	1
चंद्र राशि	वृश्चिक	**चंद्र भाव**	3वाँ

मूल नक्षत्र स्वभाव

अनुराधा नक्षत्र मित्रता, समर्पण, सहयोग और अनुशासित संबंधों के माध्यम से शक्ति विकसित करने पर जोर देता है।

मन एवं भावनात्मक शैली

चंद्रमा वृश्चिक राशि में होने से भावनात्मक प्रतिक्रिया गहरी, निजी और परिवर्तन-केंद्रित रहती है। इसकी सकारात्मक दिशा गहराई, दृढ़ता और कठिन बदलावों से गुजरने की क्षमता है; संतुलन के लिए नियंत्रण, संशय या भावनात्मक दबाव को लंबे समय तक पकड़े रखना पर ध्यान देना उपयोगी है।

जीवन-विषयों मे अभिव्यक्ति

चंद्रमा 3वें भाव में होने से नक्षत्र की संवेदनशीलता पहल, कौशल, संचार, साहस और स्व-प्रयास के विषयों में अधिक स्पष्ट रूप से अनुभव हो सकती है।

SAMPLE

शिक्षा, ज्ञान एवं कार्यशैली

नक्षत्र की मानसिक प्रवृत्ति को शिक्षा और कार्य के संदर्भ में बुध और गुरु की स्थिति के साथ पढ़ना उपयोगी है। इस कुंडली में बुध मेष राशि / 8वाँ भाव तथा गुरु कुम्भ राशि / 6वाँ भाव का संदर्भ उपलब्ध है। आगे का शिक्षा और करियर अध्याय इन ग्रहों, भावबल और दशा को अधिक विस्तार से जोड़ता है।

संबंध एवं पारिवारिक अभिव्यक्ति

चंद्र नक्षत्र भावनात्मक आवश्यकताओं का आधार देता है, जबकि शुक्र, सप्तम भाव और नवांश संबंध की शैली को अधिक स्पष्ट करते हैं। इस कुंडली में शुक्र मीन राशि और 7वें भाव के संदर्भ में पढ़ा गया है।

SAMPLE PREVIEW • Life Areas

विस्तृत जीवन फल

चरित्र एवं व्यक्तित्व

स्वभाव, भावनात्मक शैली और मूल क्षमताएँ

लग्न	कन्या	**चंद्र राशि**	वृश्चिक
नक्षत्र	अनुराधा	**प्रमुख षड्बल**	सूर्य 156% · शुक्र 154% · मंगल 141%

लग्न कन्या होने से बाहरी कार्यशैली विश्लेषणात्मक, सेवा-केंद्रित और सुधारोन्मुख रहती है। इसकी मुख्य क्षमता सूक्ष्मता, व्यवस्था और व्यावहारिक समस्या-समाधान है; संतुलन के लिए पूर्णतावाद या स्वयं की जरूरत से ज्यादा आलोचना पर ध्यान देना उपयोगी है।

चंद्रमा वृश्चिक में होने से भावनात्मक प्रकृति गहरी, निजी और परिवर्तन-केंद्रित रहती है। स्थिरता तब बढ़ती है जब भावनाओं को स्वीकार करते हुए निर्णयों को तथ्य और दीर्घकालिक उद्देश्य से भी जोड़ा जाए।

यह नक्षत्र भावनात्मक आदतों, प्रेरणाओं और अनुभव को ग्रहण करने की शैली में एक विशिष्ट परत जोड़ता है।

सूर्य मेष में होकर पहचान, आत्मविश्वास, उद्देश्य और सार्वजनिक अभिव्यक्ति को सीधी, आरंभशील और कार्य-केंद्रित शैली में व्यक्त करता है। 8वाँ भाव इस ऊर्जा को साझा संसाधन, परिवर्तन, संवेदनशीलता और गहरे बदलाव से जोड़ता है। षड्बल लगभग 156% है, जो पारंपरिक न्यूनतम के सापेक्ष तुलनात्मक रूप से समर्थ क्षमता दिखाता है। व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और जीवन-उद्देश्य के लिए रचनात्मक पक्ष स्पष्ट आत्म-दिशा और रचनात्मक नेतृत्व है, जबकि संतुलन का बिंदु अहं का दबाव, कठोरता या मान्यता पर अधिक निर्भरता है।

षड्बल में तुलनात्मक रूप से अधिक मापित सहयोग सूर्य 156%, शुक्र 154%, मंगल 141% के आसपास है। यह अन्य ग्रहों को अशुभ नहीं बनाता; केवल ग्रह-कार्य की उपलब्ध मापित क्षमता का अंतर दिखाता है।

भावबल इस विषय के लिए सापेक्ष भाव-शक्ति का अतिरिक्त संकेत देता है: 1वाँ भाव (लग्न) 4.8% · 5वाँ भाव (पुत्र) 52.4% · 9वाँ भाव (धर्म) 26.3%। ये मान ग्रह, भावेश, दृष्टि, वर्ग कुंडली और दशा के साथ पढ़े जाते हैं; अकेले किसी घटना का वादा नहीं करते।

SAMPLE

रोजगार, करियर एवं व्यवसाय

कार्यशैली, उत्तरदायित्व, प्रगति एवं समय

व्यावसायिक भाव	6वाँ भाव: गुरु, केतु	**दशमांश D10**	उपलब्ध

करियर से जुड़े भावों में 6वाँ भाव: गुरु, केतु का प्रभाव है। इससे कार्य-दिनचर्या, उत्तरदायित्व, सार्वजनिक भूमिका और दीर्घकालिक लाभ को संबंधित ग्रहों के स्वभाव के साथ पढ़ा जाता है।

सूर्य मेष में होकर पहचान, आत्मविश्वास, उद्देश्य और सार्वजनिक अभिव्यक्ति को सीधी, आरंभशील और कार्य-केंद्रित शैली में व्यक्त करता है। 8वाँ भाव इस ऊर्जा को साझा संसाधन, परिवर्तन, संवेदनशीलता और गहरे बदलाव से जोड़ता है। षड्बल लगभग 156% है, जो पारंपरिक न्यूनतम के सापेक्ष तुलनात्मक रूप से समर्थ क्षमता दिखाता है। करियर और व्यावसायिक प्रगति के लिए रचनात्मक पक्ष स्पष्ट आत्म-दिशा और रचनात्मक नेतृत्व है, जबकि संतुलन का बिंदु अहं का दबाव, कठोरता या मान्यता पर अधिक निर्भरता है।

बुध मेष में होकर सोच, संवाद, अध्ययन और व्यापारिक समझ को सीधी, आरंभशील और कार्य-केंद्रित शैली में व्यक्त करता है। 8वाँ भाव इस ऊर्जा को साझा संसाधन, परिवर्तन, संवेदनशीलता और गहरे बदलाव से जोड़ता है। षड्बल लगभग 75% है, इसलिए इस ग्रह को अन्य सहायक कारकों के साथ अधिक सावधानी से पढ़ना चाहिए। करियर और व्यावसायिक प्रगति के लिए रचनात्मक पक्ष विश्लेषण, अभिव्यक्ति, अनुकूलन और व्यावहारिक बुद्धि है, जबकि संतुलन का बिंदु मानसिक अतिभार, असंगति या जरूरत से ज्यादा गणना है।

गुरु कुम्भ में होकर विकास, ज्ञान, मार्गदर्शन, नैतिकता और अवसर को स्वतंत्र, वैचारिक और समुदाय-केंद्रित शैली में व्यक्त करता है। 6वाँ भाव इस ऊर्जा को कार्य-दिनचर्या, सेवा, प्रतिस्पर्धा, बाधाएँ और संतुलन से जोड़ता है। षड्बल लगभग 106% है, जो पारंपरिक न्यूनतम के सापेक्ष तुलनात्मक रूप से समर्थ क्षमता दिखाता है। करियर और व्यावसायिक प्रगति के लिए रचनात्मक पक्ष दृष्टिकोण, उदारता, सीखने और रचनात्मक विस्तार की क्षमता है, जबकि संतुलन का बिंदु अति, अतिआत्मविश्वास या संरचना के बिना विस्तार मान लेना है।

शनि मेष में होकर अनुशासन, जिम्मेदारी, विलंब, परिपक्वता और धैर्य को सीधी, आरंभशील और कार्य-केंद्रित शैली में व्यक्त करता है। 8वाँ भाव इस ऊर्जा को साझा संसाधन, परिवर्तन, संवेदनशीलता और गहरे बदलाव से जोड़ता है। षड्बल लगभग 87% है, इसलिए इस ग्रह को अन्य सहायक कारकों के साथ अधिक सावधानी से पढ़ना

मंगल दोष विवेचन

मंगल दोष क्या है ?

मंगल दोष का मूल्यांकन केवल मंगल की एक स्थिति से नहीं किया जाता। लग्न, चंद्र, संबंधित भाव, दृष्टि, बल तथा दोष-निरस्तीकरण के संकेतों को साथ पढ़ने पर ही संतुलित निष्कर्ष बनता है। नीचे दिया गया परिणाम इस जन्मकुंडली के उपलब्ध गणना-डेटा पर आधारित है।

मंगल दोष विवेचन

Is मंगल Manglik Cancelled	हाँ	**मांगलिक स्थिति**	प्रभावहीन
मांगलिक प्रभाव प्रतिशत	11.75	**निरस्तीकरण के बाद प्रभाव प्रतिशत**	11.75
विद्यमान	नहीं		
मांगलिक निष्कर्ष	कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । ये कहा जा सकता है की कुंडली में कोई मांगलिक दोष नहीं है ।		

मांगलिक बनने का आधार

दृष्टि के आधार पर
आपके कुंडली के द्वादश भाव को केतु देख रहा है। राहु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है। आपके कुंडली का चतुर्थ भाव राहु से दृष्ट है। सूर्य की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है। मंगल की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है। शनि की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है। केतु की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

Based On भाव
सूर्य अष्टम भाव में कुंडली में स्थित है। अष्टम भाव में मंगल अवस्थित है। शनि अष्टम भाव में आपके कुंडली में स्थित है। राहु आपके कुंडली में द्वादश भाव में है।

निरस्तीकरण का आधार
मंगल ग्रह का दोष आपकी कुंडली में कत रहा है क्योकि मंगल आठवाँ गृह में स्वयं के राशि मेष के साथ विराजमान है।

SAMPLE

साढ़ेसाती रिपोर्ट

साढ़ेसाती क्या है ?

जब गोचर शनि जन्म चंद्र राशि से बारहवें, प्रथम और द्वितीय राशि-क्षेत्र से क्रमशः गुजरता है तो लगभग साढ़े सात वर्ष का एक व्यापक शनि-चक्र बनता है। इसे केवल शुभ-अशुभ की एक पंक्ति में नहीं पढ़ना चाहिए; जन्मकुंडली में शनि की स्थिति, चंद्रमा, भावबल, दशा और वास्तविक जीवन-परिस्थिति साथ देखी जाती है। इस समय साढ़ेसाती सक्रिय नहीं है।

उदय चरण
इस चरण में जिम्मेदारियों, खर्च, एकांत, योजना और पुरानी संरचनाओं की समीक्षा प्रमुख विषय बन सकती है। उद्देश्य भय नहीं, बल्कि कार्य-प्राथमिकताओं और सीमाओं को अधिक व्यावहारिक बनाना है।

मध्य / शिखर चरण
चंद्र राशि पर शनि का गोचर भावनात्मक धैर्य, अनुशासन, परिवार और जिम्मेदारी से जुड़े विषयों को प्रमुख कर सकता है। परिणाम जन्मकुंडली और सक्रिय दशा के अनुसार व्यक्ति-विशेष होते हैं।

अंतिम चरण
द्वितीय राशि-क्षेत्र का चरण संसाधन, परिवार, वाणी और वित्तीय अनुशासन पर ध्यान दिला सकता है। यह पूर्व चरणों से सीखी बातों को स्थिर करने का समय माना जाता है।

साढ़ेसाती वर्तमान स्थिति

विचार तिथि	3-9-2026	**शनि वक्री**	हाँ
चंद्र राशि	वृश्चिक	**शनि राशि**	मीन
साढ़ेसाती सक्रिय	नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।	**साढ़ेसाती स्थिति**	नहीं
साढ़ेसाती क्या है	ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छः मास।		

SAMPLE

साढ़ेसाती जीवन-क्रम

चंद्र राशि	शनि राशि	शनि वक्री	प्रकार	तिथि	सार
वृश्चिक	तुला		RISING_START	15-11-2011	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	1	RISING_END	16-5-2012	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला		RISING_START	4-8-2012	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक		PEAK_START	2-11-2014	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु		SETTING_START	27-1-2017	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	धनु	1	PEAK_START	21-6-2017	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु		SETTING_START	26-10-2017	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर		SETTING_END	24-1-2020	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला		RISING_START	28-1-2041	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	1	RISING_END	6-2-2041	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला		RISING_START	26-9-2041	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक		PEAK_START	12-12-2043	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	वृश्चिक	1	RISING_START	23-6-2044	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक		PEAK_START	30-8-2044	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु		SETTING_START	8-12-2046	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर		SETTING_END	6-3-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	1	SETTING_START	9-7-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर		SETTING_END	4-12-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।

SAMPLE PREVIEW • Varshaphal

आयुषरुद्र वैदिक ज्योतिष

वर्षफल विवरण

वर्ष का संक्षिप्त सार

वर्ष	2026	आयु	28
annual_date	12 मई 2026, 18:51	year_lord	बुध
muntha_sign	मकर	muntha_lord	शनि
year_लग्न_lord	शुक्र		

वर्षफल कुंडली

12 भाव · राशि · ग्रह स्थिति

भाव 1लग्न तुला—	भाव 2 वृश्चिक—	भाव 3 धनु—	भाव 4 मकर—
भाव 5 कुम्भचं · रा	भाव 6 मीनश	भाव 7 मेषसू · मं · बु	भाव 8 वृषशु
भाव 9 मिथुनगु	भाव 10 कर्क—	भाव 11 सिंहके	भाव 12 कन्या—

वर्षफल विवरण

वर्षफलa वर्ष	2026	जातक की आयु	28
अयनांश नाम	लाहिड़ी	अयनांश अंश	24.2253
मूल जन्म तिथि	12-05-1998 14:22:00	वर्षफलa Date	12-05-2026 18:51:26
वर्षफलa वर्षेश	बुध		

SAMPLE

पंचाधिकारी

मुंथेश	शनि	मुंथेश Id	6
Birth लग्नेश	बुध	Birth लग्नेश Id	3
वर्ष लग्नेश	शुक्र	वर्ष लग्नेश Id	5
दिन-रात्रि स्वामी	शनि	त्रिराशि स्वामी	बुध

वर्षफलa Muntha

मुंथा राशि	मकर	मुंथा राशि स्वामी	शनि

वर्षफल ग्रह स्थिति

क्रम	नाम	पूर्ण अंश	राशिगत अंश	गति	वक्री	राशि	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	नक्षत्र चरण
0	सूर्य	27.606093361792	27.606093361792	0.96590770972461	नहीं	मेष	मंगल	कृतिका	सूर्य	1
1	चन्द्र	329.6835213648	29.683521364798	13.54606657742	नहीं	कुम्भ	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	3
2	मंगल	0.95479969045066	0.95479969045066	0.75797153184544	नहीं	मेष	मंगल	अश्विनी	केतु	1
3	बुध	25.144208743078	25.144208743078	2.1574516433738	नहीं	मेष	मंगल	भरणी	शुक्र	4
4	गुरु	86.425360311834	26.425360311834	0.16077901433206	नहीं	मिथुन	बुध	पुनर्वसु	गुरु	2
5	शुक्र	57.997438872017	27.997438872017	1.2010874573157	नहीं	वृष	शुक्र	मृगशिरा	मंगल	2
6	शनि	346.17481707305	16.17481707305	0.10408807149215	नहीं	मीन	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	4
7	राहु	310.97746196129	10.977461961292	-0.05299199561224	हाँ	कुम्भ	शनि	शतभिसा	राहु	2
8	केतु	130.97746196129	10.977461961292	-0.05299199561224	हाँ	सिंह	सूर्य	मघा	केतु	4
9	लग्न	209.49657336194	29.496573361941	0		तुला	शुक्र	विशाखा	गुरु	3

विंशोत्तरी दशा

दशा फल कैसे पढ़े ?

विंशोत्तरी दशा समय की प्रमुख परत बताती है। महादशा व्यापक जीवन-विषय देती है, अंतरदशा उस विषय को अधिक विशिष्ट ग्रह-ऊर्जा से जोड़ती है और छोटे स्तर की दशाएँ समय को और सूक्ष्म करती हैं। फल ग्रह की जन्मराशि, भाव, बल, दृष्टि और अन्य सक्रिय समय-चक्रों के साथ पढ़े जाते हैं।

महादशा	बुध · 9-4-2013 15:9 - 9-4-2030 21:9	**अंतरदशा**	गुरु · 24 अप्रैल 2025, 20:24 - 31-7-2027 18:0
प्रत्यंतर	शुक्र · 05 जून 2026, 21:38 - 21 अक्टूबर 2026, 21:14	**सूक्ष्म**	शनि · 02 सितंबर 2026, 10:34 - 24 सितंबर 2026, 06:54
प्राण	शनि · 02 सितंबर 2026, 10:34 - 05 सितंबर 2026, 21:35		

वर्तमान महादशा — बुध

इस समय सोच, संवाद, अध्ययन और व्यापारिक समझ से जुड़े विषय अधिक ध्यान मांग सकते हैं। इसकी सकारात्मक दिशा विश्लेषण, अभिव्यक्ति, अनुकूलन और व्यावहारिक बुद्धि है, जबकि संतुलन के लिए मानसिक अतिभार, असंगति या जरूरत से ज्यादा गणना से जुड़े व्यवहार-पैटर्न पर सजग रहना उपयोगी है।

वर्तमान अंतरदशा — गुरु

इस समय विकास, ज्ञान, मार्गदर्शन, नैतिकता और अवसर से जुड़े विषय अधिक ध्यान मांग सकते हैं। इसकी सकारात्मक दिशा दृष्टिकोण, उदारता, सीखने और रचनात्मक विस्तार की क्षमता है, जबकि संतुलन के लिए अति, अतिआत्मविश्वास या संरचना के बिना विस्तार मान लेना से जुड़े व्यवहार-पैटर्न पर सजग रहना उपयोगी है।

SAMPLE

वर्तमान विंशोत्तरी

महादशा

ग्रह	बुध	**आरंभ**	9-4-2013 15:9
समाप्ति	9-4-2030 21:9		

अंतरदशा

ग्रह	गुरु	**आरंभ**	24-4-2025 20:24
समाप्ति	31-7-2027 18:0		

प्रत्यंतर दशा

ग्रह	शुक्र	**आरंभ**	5-6-2026 21:38
समाप्ति	21-10-2026 21:14		

सूक्ष्म दशा

ग्रह	शनि	**आरंभ**	2-9-2026 10:34
समाप्ति	24-9-2026 6:54		

प्राण दशा

ग्रह	शनि	**आरंभ**	2-9-2026 10:34
समाप्ति	5-9-2026 21:35		

षोडशवर्ग कुंडलियाँ

D1

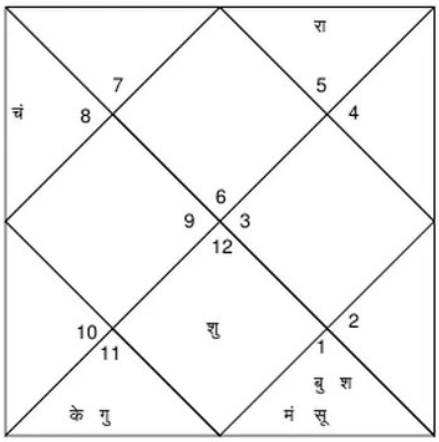

D9

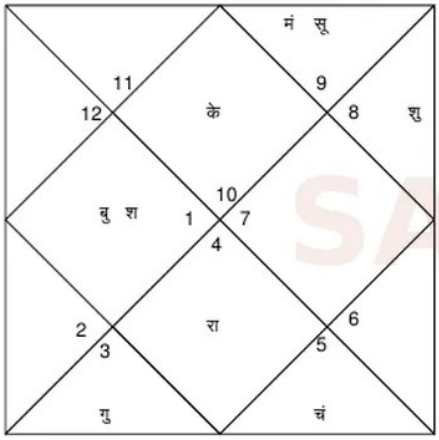

D2

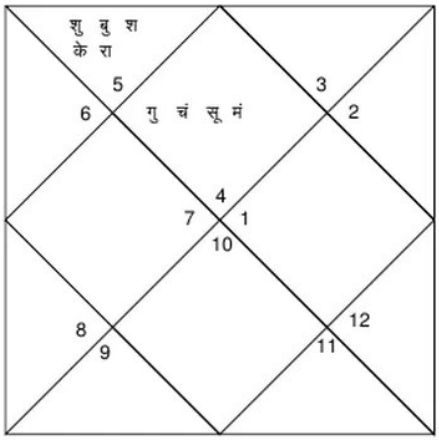

SAMPLE

षड्बल

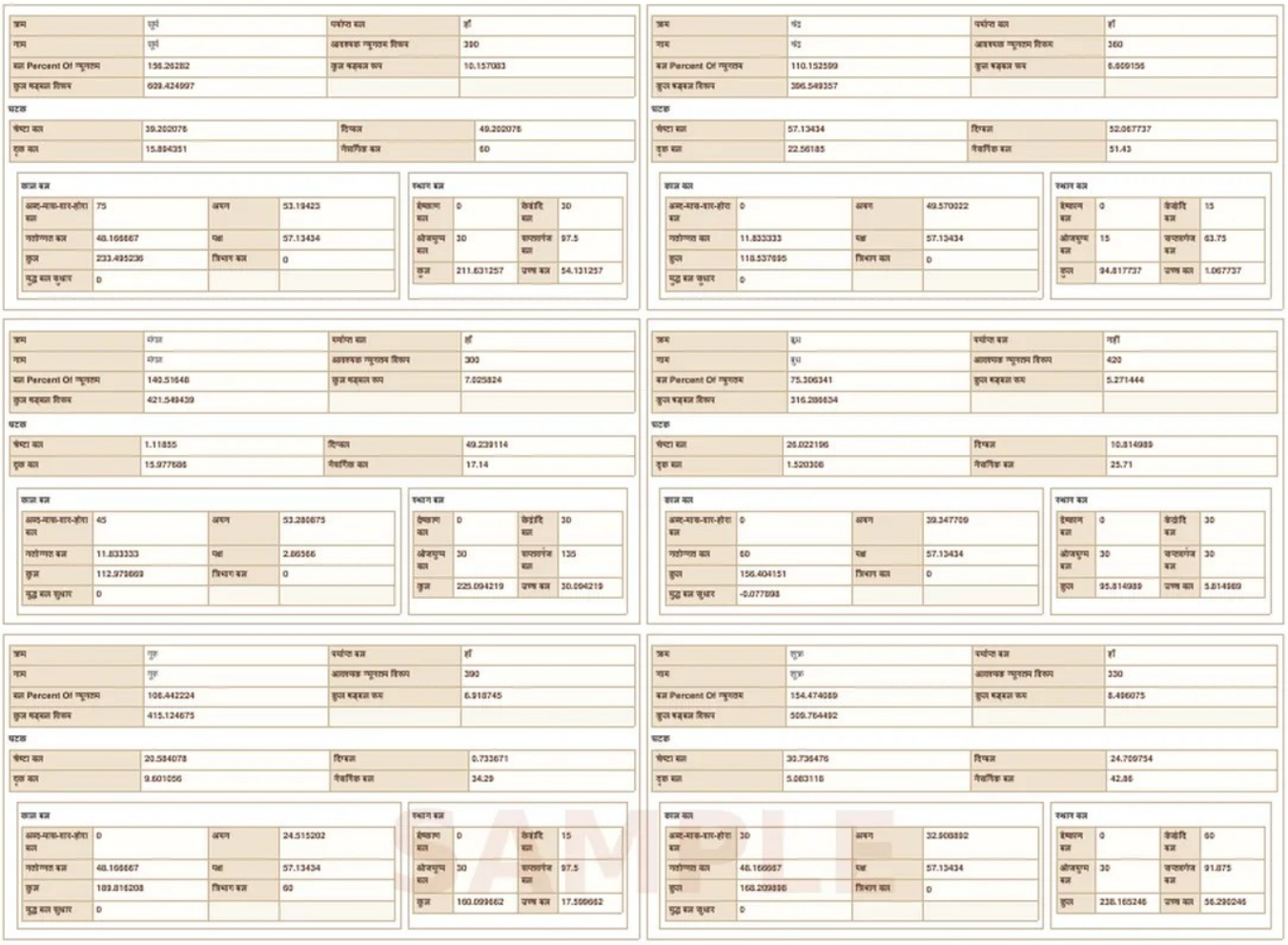

क्रम	शनि	पर्याप्त बल	नहीं
नाम	शनि	आवश्यक न्यूनतम विरूप	300
बल Percent Of न्यूनतम	86.564311	कुल षड्बल रूप	4.328216
कुल षड्बल विरूप	259.692933		

घटक

चेष्टा बल	7.140502	दिग्बल	48.965879
दृक बल	1.438134	नैसर्गिक बल	8.57

काल बल

अब्द-मास-वार-होरा बल	0	अयन	19.41898
नतोन्नत बल	11.833333	पक्ष	2.86566
कुल	94.195872	त्रिभाग बल	60
युद्ध बल सुधार	0.077898		

स्थान बल

द्रेष्काण बल	0	केंद्रादि बल	30
ओजयुग्म बल	30	सप्तवर्गज बल	33.75
कुल	99.382546	उच्च बल	5.632546